Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 2 ~ Issue 3 (2014) pp: 86-91
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

"पुर्नजागरण कालीन सामाजिक, धार्मिक सुधार आंदोलन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन "

डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह
एसो0प्रो0 – राजनीति विज्ञान
पं0 राम लखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
आलापुर, अम्बेडकरनगर, उ0प्र0

सारांश

भारतीय पुर्नजागरण सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों के लिए प्रसिद्ध है इन आंदोलनों में अनेक विद्वानों और समाज सुधारकों ने अपना विशेष योगदान दिया जिसके कारण भारत में एक नवीन व्यवस्था का जन्म हुआ और परम्परागत संरचना में अनेक प्रकार के परिवर्तन भी उभर कर सामने आये। पुर्नजागरण कालीन समाज आंदोलनों ने राष्ट्रीय आंदोलन को भी प्रेरित किया तथा समाज के समाजिक पुर्नगठन को नया आयाम दिया।

मुख्य शब्द :– पुर्नजागरण, संस्कृति, आंदोलन, आधुनिक, धर्म, दार्षनिक परम्परा, सामाजिक सुधार,

प्रस्तावना :– भारतीय सामाजिक व्यवस्था अन्योयाश्रित् रूप से धर्म से जुड़ी हुई है। जहॉ समाज सुधार धर्म सुधार द्वारा ही सम्भव था। 17 वीं 18 वीं सदी में सामाजिक क्षेत्र में अंधविश्वास का बोलबाला था। सतीप्रथा बालविवाह, शिशु हत्या जैसी सामाजिक कुरीतिया प्रचलित थी मूर्तिपूजा और बहुदेव वादी उपासना का प्रचंलन था। पुजारियों को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। वर्ण व्यवस्था संस्कार एवं कर्म पर आधारित थी। सामाजिक क्षेत्र में छुआ छूत का प्रचलन था एवं लगभग सभी कुरीतियों का आधार धर्म स्वयं था।

अध्ययन का उद्देश्य :– भारतीय पुर्नजागरण के सामाजिक, धार्मिक स्वरूप का अध्ययन।

भारतीय पुर्नजागरण को प्रेरित करने वाले कारक निम्न थे :– 1. आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव – पाश्चात्य उदारवादी विचारधारा ने शिक्षित भारतीयों को बहुत प्रभावित किया इस विचारधारा के प्रभाव से चिंतन एवं आत्ममंथन की क्रिया की शुरूआत हुई।

2. आधुनिक विज्ञान – विवेकशीलता तथा मानववाद के सिद्धात का प्रभाव।

3. नये सामाजिक वर्गों का उदय – नये समाजिक वर्ग यथा पूंजी पति वर्ग, मजदूर वर्ग तथा बुद्धिजीवी वर्ग ने आधुनिकीकरण की मॉग इसलिए की कि उनके हित के लिए यह आवश्यक था।

4. इस सामज सुधार का आधार स्तम्भ नवोदिय मध्यम वर्ग था।

राजा राम मोहन राय – इन्हें भारतीय पुर्नजागरण का जनक कहा जाता है। राजा राम मोहन राय प्राच्य एवं पाश्चात्य चिंतन के संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका मानना था कि न तो भारत के भूतकाल पर ऑख मूंदकर निर्भर रहा जाय न ही पश्चिम का अधानुकरण किया जाए। इन्होंने राजनीतिक मॉगों के अर्न्तगत निम्न बातें रखीं – 1. अन्यायपूर्ण सरकारी नीतियों का विरोध
2. ज्यूरी व्यवस्था की मॉग
3. सिविल सेवा के भरतीयकरण पर जोर
4. कुछ विशेष प्रकार के कर या लगान का विरोध क्योंकि भारतीयों जोतदारों की स्थिति अच्छी नहीं थी।
5. संस्कृत महाविद्यालयों की स्थापना का विरोध किया फिर भी भारतीय भाषाओं के विकास के इच्छुक थें।

राजा राम मोहन राय की इच्छा थी कि भारत पश्चिमी संस्कृत से सीखें परन्तु सीखने की यह प्रक्रिया एक बौद्धिक एवं सृजनात्मक प्रक्रिया हो जिसके द्वारा भारतीय संस्कृति एवं चिन्तन में नयी जान डाल दी जाए। फलतः वे

हिन्दू धर्म में सुधार के हिमायती और हिन्दू धर्म की जगह इसाई धर्म लाने के विरोधी थे। वस्तुत उन्होंने हिन्दू धर्म को अन्दर से सुधारने पर जोर दिया।

राजा राममोहन राय के धार्मिक सुधार का लक्ष्य समाज के लिए था जिसका आधार ईश्वर की एकता जो उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित विश्व चेतना पर आधारित थी जिसके निम्न कार्यों थे –

1. एकतावाद
2. मूर्तिपूजा और धर्म से जुड़े हुए अन्य प्रकार के अंध विश्वासों का विरोध।
3. तर्क को सत्य की सबसे बड़ी कसौटी मानना।
4. इसाई धर्म की कतिपय खामियों की आलोचना।
5. धर्म के प्रति उनकी उपयोगितावादी दृष्टि थी।

सामा0 सुधारों के क्षेत्र में निम्न प्रयास किये – स्त्रियों के 0उद्धार के अर्न्तगत सतीप्रथा का अंत, विधवा विवाह के प्रोत्साहन, स्त्रियों को सम्पत्ति धारण का अधिकार, बहु विवाह का विरोध, स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन, जाति प्रथा का विरोध, अंग्रेजी शिक्षा को प्रोत्साहन।

राजा राम मोहन राय ने 1889 में ब्रहम समाज की स्थापना की, ब्रहम समाज के स्पष्ट दो उददे्श्य थे पहले हिन्दू धर्म को स्वच्छ बनाना एवं एकेश्वरवाद वाद की शिक्षा देना। 1843 में देवेन्द्र नाथ ठाकुर के ब्रहम समाज ने सक्रिय रूप से विधवा पुर्नर्विवाह का उन्मूलन, नारी शिक्षा, स्त्रियों की दशा में सुधार तथा आत्म संयम का समर्थन किया।

यंग बंगाल आंदोलन – हेनरी विवियन डेरोजियो (1826–31) ने हिन्दू कालेज में प्राध्यापन का कार्य किया। वे बगांल के बुद्धि जीवियों का प्रतिनिधित्व करते थे। वे आधुनिक भारत के प्रथम राष्ट्रवादी कवि माने जाते हैं। उन्होंने अधोगामी प्रथाओं, कृत्यों और रिवाजों की घोर आलोचना की। उन्होने नारी अधिकारों की हिमायत की और नारी शिक्षा की मॉग की यह आंदोलन अधिक सफल नहीं हो इसकी असफलता के निम्न कारण थे –

1. सामाजिक परिस्थितियाँ उनके विचारों के लिए उपयुक्त नहीं थी।
2. भारतीय समाज के किसी वर्ग द्वारा समर्थन नहीं मिला।
3. किसानों के मसलों को नही उठाया गया।
4. जन सम्पर्क का अभाव।
5. भारतीय वास्तविकता की समझ की कमी।

यगं बंगाल आंदोलन का भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर इसका प्रभाव भिन्न रूप से हुआ –

1. राजा राम मोहन राय की परम्परा को आगे बढाया।
2. कम्पनी के चार्टर का संशोधन।
3. प्रेस की स्वतंत्रता।
4. विदेश स्थित ब्रिटिश उपनिवेशों में भारतीय मजदूरों के साथ बेहतर व्यवहार।
5. ज्यूरी द्वारा मुकदमों की सुनवाई की मॉग।
6. अत्याचारी जमींदारों से रैयतो की सुरक्षा।
7. सरकारी सेवाओं के उच्चतर वेतन मानों में भारतीयों को रोजगार जैसे प्रश्नों पर आंदोलन चलाए।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर – महान विद्वान एवं समाज सुधारक थे उनके सुधार निम्न है –

शिक्षा संबंधी सुधार :– 1. संस्कृत पढ़ाने के लिए तकनीक को विकसित किया।

2. बंग्ला वर्णमाला का विकास।

3. संस्कृत विद्यालय के दरवाजे गैर ब्राह्मणों के लिए खोल दिये।

4. बंगला में आधुनिक गद्यशैली का विकास।

5.संस्कृत कालेज में पाश्चात्य शिक्षा क अध्ययन प्रारम्भ किया।

सामाजिक क्षेत्र में – 1. पददलित नारी जाति को ऊॅचा उठाने में योगदान।

2. विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया। 7 दिसम्बर, 1856 विद्यासागर की प्रेरणा से पहला कानूनी विधवा विवाह कलकत्ता में हुआ।

3. 1850 में बाल विवाह का विरोध।

*Corresponding Author: डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह

4. जीवनभर बहुविवाह के विरूद्ध आंदोलन चलाया।
5.नारी शिक्षा में गहरी दिलचस्पी। स्कूलों में सरकारी निरीक्षक की हैसियत से 25 बालिका विद्यालयों की स्थापना की।

रामकृष्ण परमहंस 1834–1886 – इनका मानता था कि सभी धर्म समान है और ईश्वर से साक्षात्कार ही सभी धर्मों का सार है। इनका यह भी मानना था कि मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है क्योंकि मानव ईश्वर का मूर्त रूप है। इनके शिष्य विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। यह इसाई मिशन के ढंग पर आधारित था। इनके मुख्य कार्यक्रम स्कूल एवं कालेज की स्थापना, स्वास्थ्य केन्द्र, प्राकृतिक आपदा में सहायता कार्य आदि का प्रोत्साहन था। स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय अध्यात्मिक उत्थान में महान योगदान दिया उन्होंने पाश्चात्य जगत में जाकर भारतीय आध्यात्म की विशेषताओं की विवेचना की। स्वामी विवेकानन्द ने सामाजिक न्याय की मॉग की, सामाजिक कर्म पर जोर दिया व जाति प्रथा तथा कर्मकाण्ड की निंदा की। उन्होंने आत्म निर्भरता की वकालत की। वैचारिक स्तर पर वे 1905 के स्वदेशी उत्थान के लिए उत्तरदायी थे। वे महान मानतावादी थे। रामकृष्ण मिशन ने व्यक्तिगत मुक्ति पर नहीं बल्कि सामाजिक भलाई व समाज सेवा पर जोर दिया।

स्वामी दयानंद सरस्वती 1824–1883 : इन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। पंजाब, राजस्थान व गुजरात के क्षेत्र में यह सक्रिय रहा। ये वेदों के अमरत्व में विश्वास रखते थे, परन्तु वेदों के ईश्वरादिष्ट होने के बाद भी उनकी व्याख्या उन लोगो द्वारा होनी थी जो मानवीय प्राणी थे।

उन्होंने मानव तर्कबुद्धि को निर्णायक कसौटी माना उन्होंने मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड, पुरोहिती एवं विशेषतः जाति प्रथा एवं ब्राहमणों द्वारा प्रचलित हिन्दू धर्म का विरोध किया। उनकी दृष्टि इलौकिक थी। इन्होंने सामाजिक सुधार के निम्न कार्य किए – बाल विवाह की निन्दा, नारी समानता का प्रचार, राष्ट्रीय शिक्षा पर जोर, वैदिक ज्ञान, संस्कृत और वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार के लिए प्रचार करना, उनके अनुयायियों द्वारा हरिद्वार गुरूकुल की स्थापना करना, शुद्धि आंदोलन की शुरूआत परन्तु अन्ततोगत्वा अखिल हिन्दुत्व के प्रचार से जुड़े रहने के कारण आर्य समाज ने साम्प्रदायिक तनाव को बढ़ाया। साथ ही यह भारतीय राजनीति में उदित अतिवादी प्रवृत्ति से भी जुड़ गया।

थियोसोफिकल सोसाइटी – ऐनी बेसेन्ट भारत में थियोसोफिकल आंदोलन की लोक प्रियता के लिए उत्तरदायी थी। थियोफिस्टो ने हिन्दू धर्म और बोद्ध धर्म जैसे प्राचीन धर्मों को पुर्नजीवित करने और मजबूत बनाने की हिमायत की। उन्होंने आत्मा और पुनर्जीवन को माना। पुर्नजागरणवादियों के फलस्वरूप थियोसोफिस्ट अधिक सफल नहीं रहे परन्तु उन्होंने भारतीय धर्म और दार्शनिक परम्परा का गुणगान कर भारतीयों में आत्मविश्वास पैदा किया।

सैय्यद अहमद खॉ 1817–1898 : उन्होंने कुरान को इस्लाम की एकमात्र अधिकृत कृति माना परन्तु कुरान की व्याख्या भी बुद्धिवाद और विज्ञान के प्रकाश में की गयी। उन्होंने आधुनिकरण का विरोध किया। आधुनिक शिक्षा पर जोर दिया तथा मुस्लिम समाज में विज्ञान व आधुनिकता के प्रसार तथा संस्कृति की रक्षा व प्रसार के लिए एंग्लो मोहम्मडन ओरियटल कालेज की स्थापना की। धार्मिक सहिष्णुता में विश्वास जताया, राष्ट्रीय आंदोलन से मुस्लिमों को अलग रहने का परामर्श दिया। औरतों का दर्जा ऊँचा उठाने क आग्रह किया, पर्दा प्रथा का विरोध व स्त्री शिक्षा की वकालत की।

पारसी धर्म सुधार के अन्तर्गत निम्न कार्य हुए :– 1857 में 'रहनुमाई माजदायासन सभा' या 'धार्मिक सुधार परिषद् की स्थापना' हुई। इसकी स्थापना नौरोजी फुरदीन जी, दादा भाई नौरोजो फुरदोनजी, दादा भाई और एस0एस0 बंगाली के उद्योग से हुई।

इसने धार्मिक क्षेत्र में जमी हुई रूढ़िवादिता के खिलाफ अभियान चलाया। साथ ही इसने नारी शिक्षा विवाह तथा औरतों की समान अवस्था की वकालत की।

सिख आंदोलन – 1920 ई0 अकाली आंदोलन की शुरूआत हुई। इस आंदोलन का उददेश्य गुरूद्वारों के प्रबंध को स्वच्छ बनाना था। इसके परिणाम स्वरूप 1922 ई0 में एक 'नया सिख गुरूद्वारा एक्ट' पारित हुआ।

महाराष्ट्र में भी सुधारवादी चेतना विकसित हुई 1849 में परमहंस मंडली की स्थापना हुई। इसके संस्थापक एकेश्वरवाद में विश्वास रखते थे और मूलतः जाति के नियम तोड़ने में विश्वास रखते थे। ज्योतिबा फूले एवं विष्णु शास्त्री पंण्डित महाराष्ट्र के दो महत्वपूर्ण समाज सुधारक थे।

नारी मुक्ति आंदोलन – आधुनिक चेतना के उदय के साथ महिलाओं की सामाजिक दशा को सुधरने के लिए भी प्रयास किए गए। मानवतावादी एवं समतावादी भावनाओं से प्रेरित होकर सुधारकों ने उसकी दशा सुधारने के लिए आंदोलन शुरू किए। गवर्नर जनरल बेटिक ने 1829 ई0 में सती प्रथा का अंत कर दिया। प्रारम्भ में यह केवल बंगाल में लागू हुआ किन्तु 1830 ई0 में बम्बई वं मद्रास में भी लागू कर दिया गया। उसी तरह शिशु हत्या निषेद के लिए भी समय–समय पर कानून बनाए गये।

स्त्रियों की स्थिति सुधारने की दिशा में बाल विवाह अनुमति के प्रश्न पर आंदोलन शुरू किए गए। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने वेद से प्रमाण लेकर यह स्थापित कि वैदिक युग में विधवा विवाह प्रचलन में था। अन्ततः 1856 में हिन्दू

*Corresponding Author: डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह

विधवा पुनः विवाह अधिनियम पारित हुआ जिसके द्वारा विधवाओं को विवाह की अनुमति मिल गई। बम्बई में प्रो0डी0 के कर्वे और मद्रास के विरेशालिगम ने इस दिशा में विशेष प्रयत्न किया। प्रो0 कर्वे ने विधुर होने पर 1893 में पूना में एक विधवा आश्रम स्थापित किया।

बाल विवाह का भी विरोध किया जा रहा था। 1872 ई0 में इस दिशा में प्रयास हुआ जब नेटिव मैरिज एक्ट पारित हुआ। इसमें 14 वर्ष से कम आयु की कन्या को विवाह से वर्जित कर दिया गया था तथा बहुविवाह को गैरकानूनी घोषित किया गया। एक पारसी सुधारक वी0 एम0 मलावारी के प्रयत्नों के फलस्वरूप 1891 ई0 में सम्पत्ति आयु अधि0 पारित हुआ इसमें 12 वर्ष से कम आयु की कन्याओं के विवाह पर रोक लगा दी गयी थी। 1930 में हरप्रसाद शारदा एक्ट के प्रयासों से शारदा एवन्ट पारित किया गया इसमें पुरूषों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु सीमा 18 वर्ष तथा कन्याओं के लिए 14 वर्ष कर दी गयी थी।

स्त्रियों में शिक्षा के प्रसार के लिए भी प्रयत्न किए गए। इस दिशा में सर्वप्रथम इसाई मिशनरियों ने प्रयास किया।

1819 में 'कलकत्ता तरूण स्त्री सभा' की स्थापना हुई। जे0ई0 वेटन द्वारा 1849 में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की गयी। 1854 के घोषणा पत्र में स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया।

नारी मुक्ति की दिशा में राष्ट्रीय आंदोलन ने अपनी अहम भूमिका निभाई। 20वीं सदी के प्रारम्भ में बंग भंग आंदोलन में भी स्त्रियों ने भूमिका निभाई। असहयोग जन आंदोलन था जिसमें महिलाओं की अच्छी भागीदारी हुई। 20वीं शताब्दी के तीसरे दशक में किसान आंदोलन एवं ट्रेड यूनियन आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी हुई। प्रसिद्ध कवियित्री सरोजिनी नायडू राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनी। 1937 में जब लोकप्रिय सरकारें गठित हुई तो उनमें भी महिलाओं की अच्छी भागीदारी रही।

1920 ई0 के बाद जब महिलाओं में जागृति आयी तो कुछ महिलाएं नेतृत्व के लिए आगे बढ़ी। 1927 में अखिल भारतीय महिला सभा का गठन हुआ किन्तु वास्तविक प्रयास स्वतंत्रता के पश्चात् ही किए जा सके। स्वतंत्रता के बाद 1950 में नया संविधान लागू हुआ इस संविधान ने पुरूषों और महिलाओं के लिए समानता के प्रावधान किए। 1955 में हिन्दू विवाह अधिनियम लाया गया जिसके द्वारा स्त्रियों को विवाह विच्छेद का अधिकार दे दिया गया। 1956 में हिन्दू उत्तराधिकार अधि0 लाया गया। इसके द्वारा महिलाओं को भी पुरूषों के समानातर अधिकारों में वृद्धि हुई।

इस तरह हम देखते हैं कि 19सदी में लगभग सभी भारतीय धर्मों में सुधार की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। हिन्दू धर्म में ब्रहम समाज एवं आर्यसमाज। इस्लाम धर्म में शरीन सभा और अकाली आंदोलन, पारसी धर्म में रहनुमाई माजदायासन सभा प्रमुख थे। लगभग सभी सुधारक आधुनिक विज्ञान तथा विवेक शीलता तथा मानववाद के सिद्धांत से प्रभावित थे। किन्तु स्वरूप की दृष्टि से इन आंदोलनों में भी बहुत फर्क था।

कुछ विचारकों की अतीत पर निर्भरता थी तो कुद विचारकों पर पाश्चात्य चिंतन का अधिक प्रभाव था आर्य समाज थियोसोफिकल सोसाइटी बहावी आंदोलन ये सभी अतीत पर कुछ अधिक ही निर्भर थे। दूसरी तरफ ब्रहम समाज, प्रार्थना समाज आधुनिकता के तत्वों से अधिक प्रभावित था।

सुधारवादी आंदोलन के निम्न बौद्धिक मापदंड थे – 1. तर्कबुद्धि वाद एवं धार्मिक सार्वभौमवाद।
2. मान्यताओं की सामा0 उपयोगिता पर बल।

3. महाराष्ट्र में लोगों की धर्म पर निर्भरता कम थी।

4. विश्ववादी नजरिया।

5.राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन भी सार्वभौमिक चिंतन से प्रभावित।

6.सुधारवादियों का उददेश्य आधुनिकीकरण था न कि पश्चिमीकरण।

7.संस्कृति के प्रतिगामी तत्वों तथा सत्ता द्वारा संरक्षित औपनिवेशिक संस्कृति और विचारधारा से एक साथ संघर्ष।

सीमाएँ – 1. भारतीय पुर्नजागरण यूरोपीय पुर्नजागरण से भिन्न थाा भारतीय पुर्नजागरण को भौगोलिक खोज, वैज्ञानिक अविष्कार का सहारा नहीं मिला।

2. आज के इतिहासकार इस बात को मानने लगे हैं कि पुर्नजागरणवादियों ने आधुनिकीकरण पर बल देने के क्रम में पश्चिमीकरण पर ही बल दिया। भारत में आधुनिकीकरण भारतीय मॉडल पर ही लाया जा सकता था पश्चिमी मॉडल पर नहीं एवं इसका आधार संस्कृत साहित्य ही हो सकता था अंग्रेजी साहित्य नहीं।

*Corresponding Author: डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह

3. पश्चिती उदारवाद पर अतिरिक्त बल दिया गया। पश्चिमी उदारवाद का अन्तर्निहित परिणाम पूँजीवाद का पोषण एवं शोषण का समर्थन था।

4. भारतीय पुर्नजागरण में छद्म वैज्ञानिकता का पोषण हुआ और बहुत हद तक उसकी दृष्टि रूढ़िवादी ही रही।

5.बहुत से विचारकों के विचारों में अर्न्तविरोध भी देखा जा सकता है, जबकि सामाजिक सुधार की वकालत से शुरू होकर वे सम्प्रदायवाद की ओर उन्मुख हो गये।

इसके दो नकारात्मक पहलू थे – 1. यह केवल शहरी मध्यम और उच्चवर्ग से जुड़ा हुआ था।
2. पीछे देखने अतीत की महानता की दुहाई देने एवं धर्मग्रंथों के प्रमाण पर निर्भरता की प्रवृत्ति देखी जा सकती थी।

- इसने साम्प्रदायिक–विभेद को जन्म दिया।
- सांस्कृतिक विरासत के धार्मिक तथा दार्शनिक पहलू पर एकांगी जोर दिया। दूसरी ओर कला और वास्तुकला, साहित्य, संगीत विज्ञान, टेक्नोलॉजी पर जोर नहीं दिया गया।
- भारतीय संस्कृति की प्रशंसा को प्राचीन काल तक ही सीमित रखा गया।
- स्त्रियों और अछूतों की हिस्सेदारी बहुत कम रही।

सबल पक्ष –

1. इसने भारतीयों में देशाभिमान का भाव भर दिया।
2. भारतीयों को आधुनिक संसार से समझौता करने में सहायता दी।
3. संकुचित दृष्टिकोण के स्थान पर एक आधुनिक, इहलौकिक, धर्मनिरपेक्ष और राष्ट्रीय दृष्टिकोण को बल दिया।
4. सास्कृतिक एवं बौद्धिक अलगाव का खात्मा किया।

निष्कर्ष – भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के परिणाम स्वरूप इसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक ताने बाने पर गहरा प्रभाव पड़ा। भारत पर अंग्रेजों से पूर्व भी कई अन्य साम्राज्यवादी ताकतें आयी और काफी लम्बे समय तक भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े हिस्से को अपनी अधीनस्थता में रखा परन्तु इन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को इतना अधिक प्रभावित नहीं किया जितना अंग्रेजों ने किया। पूर्व के आक्रांताओं ने भारतीय संस्कृति को अपना लिया और भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बन गये। पूर्व के आक्रांता ओर अंग्रेजों में एक प्रमुख अंतर यह था कि अंग्रेज पूरे औपनिवेशिक शासन काल में भारतीय संस्कृति और सभ्यता को प्रभावित करने का प्रयास करते हरे और स्वयं को भारतीय सभ्यता से पृथक रखा। अंग्रेजों में भारतीय सभ्यता के साथ सामंजस्य का कोई भी भाव दिखायी नहीं देता है औपनिवेशिक काल में भारतीय समाज ओर संस्कृति पर यूरोपीय सभ्यता, शिक्षा विज्ञान प्रौद्यिगिकी का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। अंग्रेजी शासन और अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव स्वरूप बुद्धिजीवियों ने भारतीय समाज में जागृति उत्पन्न करने और सामाजिक कुरीतियों व धार्मिक अन्धविश्वासों को समाप्त करने हेतु जागरण प्रारम्भ किया। औपनिवेशिक काल में यह जागरण विभिन्न प्रकार के सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलनों के रूप में दिखता है ।

जैसे – ब्रम्ह समाज, आर्यसमाज, राम कृष्ण मिशन, थियोसोफिक्ल सोसाइटी इत्यादि। इन आंदोलनों और इसके नेताओं जैसे – राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वर चन्द्र विद्या सागर, महादेव गोविन्द रानाडे, ज्योतिबा राव फूले, बाल गंगाधर तिलक इत्यादि ने भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारत में पुर्नजागरण्ण के फलस्वरूप जो सामाजिक, धार्मिक आंदोलन उत्पन्न हुआ उसने भारतीय समाज को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया एवं समाज में नवीन जागृति उत्पन्न की। भारत में समाज सुधार और धर्म सुधार का आंदोलन अलग–अलग न चलकर एक साथ चले और इसने भारतीय जनमानस को प्रेरित किया। भारतीय जनता में आत्म गौरव का भाव उत्पन्न किया और स्वतंत्रता आंदोलन को पथ प्रदर्शित किया।

संदर्भ

1. विपिन चंद्रा, आधुनिक भारत, नर्ह दिल्ली, 1971
2. सुमित सरकार, आधुनिक भारत, 1885–1947, दिल्ली, 1983
3. A. R.Desai, Social Background of Indian Nationalism, Bomboy, 1959, edition
4. Percival spear, Oxford history of Indian, New Delhi, 1974
5. R.palme Dutt, India Today, Bombay, 1949

*Corresponding Author: डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह

6. Charles Hiemsath, India nationalism and Hindu social reform. Princeton, 1964
7. V.C. Joshi, editor, RamMohan and the process of modernization in India Delhi, 1975
8. Ashok Sen, Elusive Milestones of Ishgwar Chandra Vidyasagar, Calcutta, 1977
9. K.N. Panikkar, editor, studies in history, special issue on intellectual history of colonial India, volume 3, no. 1,Jan-June 1987